संदेश

28 जुलाई से 3 अगस्त, 2021 तक शहीद स्मृति सप्ताह का आयोजन करें!

जन योद्धा मृत्युंजय हैं

आपकी कुरबानियों की पालकी के कहार हम,
आपके आशयों की पूर्ति करके ही लेंगे दम

वर्ग संघर्ष व जनयुद्ध को देश भर में तेज व विस्तार करने के जरिए दुश्मन के समाधान–प्रहार हमलों को परास्त करेंगे!

(पार्टी की सभी कतारों, पीएलजीए के कमांडरों व योद्धाओं, क्रांतिकारी जन निर्माणों, मजदूरों, किसानों, छात्राओं व छात्रों, बुद्धिजीवियों एवं तमाम उत्पीड़ित लोगों के लिए)

केंद्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

शहीदों के बलिदान व्यर्थ नहीं जाएंगे, आपके बलिदानों की स्फूर्ति से हम आगे बढ़ते रहेंगे!

वर्ग संघर्ष व जनयुद्ध को देश भर में तेज व विस्तार करने के जरिए दुश्मन के समाधान-प्रहार हमलों को परास्त करेंगे!

प्यारे कॉमरेडों, लोगों!

क्रांतिकारी दिवसों के आयोजन में 28 जुलाई विशेष रूप से उल्लेखनीय महत्व रखता है. इस दिन हम उन तमाम शहीदों जिन्होंने देश, दुनिया की उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए अपने अनमोल जानें कुरबान की, को आदर, सम्मान के साथ याद करते हैं और उनके अधूरे आशयों की पूर्ति का संकल्प लेते हैं. इस संदर्भ में भारत की क्रांति के महानायक, हमारी पार्टी के संस्थापक नेता, शिक्षक, अमर शहीद कॉमरेड् चारु मजुमदार और कॉमरेड् कन्हाई चटर्जी, नक्सलबाड़ी किसान सशस्त्र संघर्ष से लेकर अब तक भारत की नवजनवादी क्रांति, अंततः समाजवाद–साम्यवाद की स्थापना के लक्ष्य के साथ अपने प्राण न्योछावर करने वाले तमाम वीर शहीदों, क्रांतिकारी जनता, दुनिया भर के क्रांतिकारी आंदोलनों, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों में सर्वोच्च बलिदान देने वाले सभी शहीदों को हमारी केंद्रीय कमेटी सिर झुकाकर विनम्रतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करती है और लाल सलाम् पेश करती है. साथ ही उनके अधूरे आशयों को पूरा करने की शपथ लेती है. विगत साल भर में शहीद हुए 160 साथियों को विशेष तौर पर याद करती है और प्रत्येक के नाम पर श्रद्धांजलि अर्पित करती है. इन शहीदों की याद में 28 जुलाई से 3 अगस्त, 2021 तक शहीदों की स्मृति सप्ताह को उनके बलिदानों की स्फूर्ति लिए तथा क्रांतिकारी उत्साह के साथ मनाने सभी पार्टी कतारों, पीएलजीए बलों, क्रांतिकारी जन निर्माणों, मजदूरों, किसानों, छात्र–युवाओं, बुद्धिजीवियों, तमाम उत्पीड़ित वर्गों व सामाजिक तबकों की जनता का आह्वान करती है.

वर्ग समाज के इतिहास में पहली बार शोषक–शासक वर्गों की सत्ता को उखाड़ फेंककर सर्वहारा वर्ग की सत्ता के तौर पर स्थापित पेरिस कम्यून को इस साल डेढ़ सौ साल पूरे हो गए हैं. हालांकि वह 72 दिनों तक ही जीवित रहा लेकिन उत्पीड़ित वर्गों विशेषकर मजदूर वर्ग में एक नयी आशा व विश्वास को जगाया कि वह अपनी सत्ता को कायम कर सकता है. उससे सबक लेकर रूस, चीन सहित दुनिया के कई देशों में सर्वहारा क्रांतियां सफल हुईं और समाजवादी व्यवस्थाओं का निर्माण भी हुआ. हालांकि वो क्रांतियां क्म्युनिस्ट पार्टियों में पनपे संशोधनवाद की वजह से हार गयीं लेकिन समाजवाद व

साम्यवाद की स्थापना के लक्ष्य से क्रांतिकारी आंदोलनों का सिलसिला आज भी जारी है. पेरिस कम्युन की 150वीं वर्षगांठ के इस विशेष संदर्भ में उसकी स्फूर्ति व प्रेरणा से लैस होकर भारत में जन राज्यसत्ता के संगठनों के तौर पर अस्तित्व में आयी क्रांतिकारी जन कमेटियों(रिवोल्यूशनरी पीपुल्स कमेटीज) को बचाने, मजबूत करने व उनका विस्तार करने जी जान से लड़ेंगे. पेरिस कम्यून को स्थापित करने की लड़ाई में और उसे बचाने की कोशिश में तथा उसके हार जाने के बाद फ्रांस के पूंजीपति वर्ग द्वारा अंजाम दिए गए कत्लेआम में अपने प्राण न्योछावर करने वाले मजदूर नेताओं, मजदूरों को इस संदर्भ में याद करना व उन्हें जोहरा अर्पित करना लाजिमी है.

वर्ग संघर्ष और जनयुद्ध में शहादत आम बात है. शहादतों के बलबूते ही वर्ग संघर्ष/जनयुद्ध तेज व विस्तार हुआ है. नक्सलबाड़ी सशस्त्र कृषि क्रांति के समय से ही दुश्मन के हमलों का मुकाबला करना शुरू हुआ. दुश्मन के खिलाफ व्यवहारयोग्य सैद्धांतिक सूत्रीकरण तथा वैचारिक स्पष्टता ने लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना एवं बलिदान की चेतना को विकसित किया. इसी चेतना से लैस होकर युवती–युवक पार्टी के नेतृत्व में इस देश की क्रांति को अपने खून से सींच रहे हैं. दुश्मन के खिलाफ संघर्ष के क्रम में कुछेक बार हमारी पार्टी ने अस्थायी हार का सामना अवश्य किया लेकिन उसने कभी संघर्ष के लाल झंडे के आन, बान, शान में कोई आंच नहीं आने दिया. हार से सबक लेते हुए शहीदों की कुरबानियों व उनसे स्फूर्ति लेकर आगे बढ़ती आयी है. हम महान नक्सलबाड़ी के वारिस हैं. उसकी प्रेरणा से बनी दो धाराओं – भाकपा (मा–ले)(पीपुल्सवार) और एमसीसीआई के एक महाप्रवाह में विलय से बनी पार्टी है, हमारी भाकपा(माओवादी) जो हजारों शहीदों की अमूल्य कुरबानियों से भारत की नवजनवादी क्रांति का नेतृत्व कर रही है. हमारे देश में नव जनवादी क्रांति, समाजवाद व अंततया साम्यवाद को कायम करने के लक्ष्य के लिए भविष्य की जीत के प्रति आशा व आकांक्षा लिए शहीदों ने अपनी शहादत दी.

शहीदी सप्ताह के इस संदर्भ में तेलंगाना के इंद्रवेल्ली को भी याद करेंगे. तेलंगाना के आदिलाबाद जिले के इंद्रवेल्ली में आदिवासी आम सभा पर पाशविक गोलीकांड/नरसंहार को इस वर्ष 40 बरस पूरे हो गए हैं. इंद्रवेल्ली नरसंहार एक तरफ आदिवासियों के प्रति शोषक–शासक वर्गों की क्रूरता व अमानवीयता का संकेत बना हुआ है तो दूसरी तरफ वह आदिवासियों के हक की लड़ाई का प्रतीक बना हुआ है. जल–जंगल–जमीन व अधिकार के लिए आदिवासियों के आंदोलनों व आंदोलनरत आदिवासियों के कत्लेआम का सिलसिला आज पर्यंत जारी है. इसका ताजातरीन उदाहरण है, दंडकारण्य के बस्तर के सिलंगेर कैंप

विरोधी आदिवासी आंदोलन और उस पर 17 मई का गोलीकांड जिसमें कुल 5 निहत्थे आदिवासी मारे गए जिनमें 14 साल का नाबालिग लड़का भी शामिल है. इन तमाम नरसंहारों में जान गंवाने वाली जनता को भी इस संदर्भ में याद करेंगे.

विगत साल भर में देश भर में हमारी पार्टी, पीएलजीए, जन निर्माणों के कुल 160 कॉमरेड शहीद हुए. इनमें से बिहार–झारखंड में 11, दंडकारण्य में 101, ओडिशा में 14, महाराष्ट्र–मध्यप्रदेश–छत्तीसगढ़ (एमएमसी) में 8, आंध्र–ओडिशा सीमा क्षेत्र में 11, पश्चिम घाटी में 1, तेलंगाना में 14 कॉमरेड शहीद हुए. इनमें से महिला कॉमरेडों की संख्या 30 है. शहीद कॉमरेडों में एक केंद्रीय कमेटी सदस्य, तेलंगाना एसजडसी सचिव, कामरेड यापा नारायणा (लक्मु, हरभूषण), एक एसजडसी सदस्य कॉमरेड् पवन (दंडकारण्य); 10 डीवीसी/सीवायपीसी सदस्य – कॉमरेड् संतोष यादव(आलोक, जोनल कमांडर–बीजे), अमरेश भोक्ता(जोनल कमांडर–गया, बीजे), कॉमरेड् आत्रम सुरेश(अजित, सेंट्रल इंस्ट्रक्टर), कॉमरेड् मनीराम वेड्दा(सोमजी, डिविजनल कमांडर इन चीफ, डीके), कॉमरेड् हीरासिंह कुम्मेटी (वर्गेश, डीवीसीएम–डीके), कॉमरेड् रुकनी(निर्मला, डीवीसीएम–घुमसर एरिया प्रभारी, ओएस), कामरेड रविंद्रर (डीवीसीएम, ओएस) कॉमरेड् गड्डम मधुकर (शोभराय, डीवीसीएम, दक्षिण सब जोन कम्युनिकेशन टीम प्रभारी–डीके), कॉमरेड् उड़वे मुहंदा (सतीश, सीवायपीसीएम, कंपनी–10, दंडकारण्य), कॉमरेड् संदे गंगन्ना (अशोक डीवीसीएम–एओबी), कॉमरेड् माड़वी मुकेश (रणदेव, डीवीसीएम–एओबी); वरिष्ठ पार्टी सदस्य कॉमरेड् कत्ति मोहन राव (प्रकाश, दामा–डीके), 37 एसी/पीपीसी सदस्य; 35 पार्टी सदस्य; 11 पीएलजीए सदस्य; 22 जन निर्माणों – मिलिशिया कमांडर व सदस्य, आरपीसी अध्यक्ष व सदस्य, जन संगठन सदस्य – के नेता व कार्यकर्ता; 15 क्रांति के हमदर्द व क्रांतिकारी जनता शामिल हैं. 27 कॉमरेडों का विवरण प्राप्त करना बाकी है. इनके अलावा देश भर के 20 जनवादी, प्रगतिशील जन संगठनों के नेता व कार्यकर्ता, क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थक, हमदर्द व हितैषियों की भी मुत्यु हुई. इनमें से 95 साथी दुश्मन के हमलों व पीएलजीए द्वारा किए गए हमलों के दौरान दुश्मन के साथ आमने–सामने वीरोचित ढंग से लड़ते हुए शहादत को पाए. जबकि झूठी मुठभेड़ों में 42 साथी, दुर्घटनाओं में 5, बीमारियों की वजह से 13 साथियों की शहादत हुई जबकि 5 साथयों का विवरण उपलब्ध नहीं है.

केंद्रीय कमेटी सदस्य, तेलंगाना राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड् यापा नारायणा (हरिभूषण, लक्मु) का 21 जून, 2021 को सुबह 9 बजे कोरोना महामारी के चलते

दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया. वर्तमान महबूबाबाद जिला (अविभाजित वारंगल जिला), गंगारम मंडल के मडागूडेम गांव में 1960 के दशक की आखिरी में एक आदिवासी किसान परिवार में उनका जन्म हुआ. उच्च शिक्षा के लिए जिला केंद्र में जाकर वहीं उन्होंने क्रांतिकारी राजनीति सीखी. उसके बाद आईटीडीए में नौकरी करते हुए कॉमरेड् नारायणा वारंगल जिले के क्रांतिकारी छात्र आंदोलन एवं सामंतवाद विरोधी संघर्षों के प्रभाव से तथा महबूबाबाद इलाके में दक्षिणपंथी ''प्रजापंथा'' पार्टी की दिवालिया राजनीति, उनकी जनविरोधी धौंसकारी नीतियों के खिलाफ वे माओवादी राजनीतिक के साथ दृढ़तापूर्वक एकताबद्ध हो गए थे. उस तरह वे 1988 में नौकरी छोड़कर पेशेवर क्रांतिकारी बनकर 1990 तक रैडिकल युवा संगठन में काम करते रहे. 1990 में पार्टी निर्णय के अनुसार वे छापामार दस्ते में शामिल हो गए. 1992 से 1996 तक उन्होंने पांडव दस्ते के कमांडर की जिम्मेदारी निभायी. 1992 में आयोजित सैनिक प्रशिक्षण कैंप में वे बतौर छात्र शाहिल हुए. 1995 में आयोजित उत्तर तेलंगाना की पहली महासभा में प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए. तब वे एरिया कमेटी सचिव थे. 1996 में डीवीसी स्तर की पदोन्नति पाकर 1998 आखिरी में प्लाटून कमांडर की जिम्मेदारी निभायी. जनता का विश्वास हासिल करने वाले अच्छे संगठनकर्ता ही नहीं बल्कि साहसिक कमांडर के तौर पर वे विकसित हुए. कॉमरेड् लक्मु के नाम पर उन्होंने 2000 से 2005 तक केंद्रीय कमेटी द्वारा बनाई गयी नयी सुरक्षा प्लाटून के कमांडर की जिम्मेदारी भी बखूबी निभायी. केंद्रीय नेतृत्व की सुरक्षा जिम्मेदारी में वे अत्यंत विश्वसनीय कॉमरेड् व कुशल कमांडर बन गए. इसी दौरान वे सेंट्रल इंस्ट्रक्टर टीम का सदस्य भी बन गए. 2005 आखिरी में तेलंगाना राज्य कमेटी सदस्य की हैसियत से वे फिर से तबादले पर तेलंगाना गए. 2018 में आयोजित सीसी की 6वीं बैठक में उन्हें केंद्रीय कमेटी में को–ऑप्ट किया गया था. 2007 में आयोजित तेलंगाना स्पेशल जोनल महासभा में अपनाए गए तेलंगाना आंदोलन के पुनर्विकास के कार्यभारों के अमल के लिए कॉमरेड् लक्मु ने आखिरी सांस तक अविराम कार्य किया. पृथक तेलंगाना राज्य आंदोलन की दूसरी लहर का फायदा उठाते हुए जनवादी तेलंगाना हासिल करने कार्यभार को पार्टी की ओर से जन आंदोलन के सामने रखने में, उस दिशा में क्रांतिकारी जन संगठनों, संयुक्त कार्रवाई को मार्गदर्शन देने में पहले उत्तर तेलंगाना राज्य कमेटी सदस्य व बाद में तेलंगाना राज्य कमेटी के सचिव की हैसियत से उन्होंने अपना योगदान दिया. 2 जून, 2014 को जब भौगोलिक तेलंगाना स्थापित हुआ, तब जनता की उस जीत को ऊंचा उठाते हुए ही जनवादी तेलंगाना हासिल करने की दिशा में और भी पहलकदमी, दृढ़संकल्प के

साथ काम करने की जरूरत को राज्य कमेटी ने चिह्नित किया और उस कार्यभार को हासिल करने लगन के साथ काम किया. 2015 से लेकर अपनी अंतिम सांस तक कॉमरेड् लक्मु उक्त कार्य में लगे रहे. पृथक राज्य हासिल करने के दौरान उपलब्ध सफलताओं को संगठित करते हुए जन संगठनों में विकसित कार्यकर्ताओं को पार्टी में संगठित कर गुप्त पार्टी के निर्माण कार्य में तथा क्रांतिकारी आंदोलन में नए कैडरों को भर्ती करने उन्होंने काफी मेहनत की. इस भर्ती में से चयनित कॉमरेडों को पार्टी की अन्य जरूरतों के लिए आवंटित किया गया. इस क्रम में 2020 की आखिरी तक तेलंगाना आंदोलन के सेटबैक से बाहर आने की स्थिति में पहुंचने का केंद्रीय कमेटी की 6वीं कंटिन्यूटी बैठक ने आकलन लगाया.

तेलंगाना राज्य कमेटी ने कॉमरेड् लक्मु के नेतृत्व में दंडकारण्य आंदोलन की राजनीतिक, प्रचार, कइयों किस्म की सामग्री उपलब्ध कराने सहित कई रूपों में मदद पहुंचायी. सीसी की 6वीं कंटिन्यूटी बैठक द्वारा फायनल की गयी सीसी की पीओआर सहित विभिन्न पार्टी दस्तावेजों पर हुई चर्चाओं में कॉमरेड् लक्मु सक्रिय रूप से शामिल हुए. वे जनता से बहुत प्यार करते थे. वे निरंतर अध्ययनरत रहते थे. वे कुशल व अच्छे सैनिक जनरल थे. तीन दशकों से भी ज्यादा क्रांतिकारी अनुभव से लैस युवा नेतृत्व के तौर पर उभरे कॉमरेड् लक्मु की शहादत भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के लिए तत्काल अपूरणीय क्षति है.

कॉमरेड् पवन डीके एसजडसीएम, पश्चिम सब जोनल ब्यूरो सदस्य, उत्तर गढ़चिरोली डिविजन सचिव की जिम्मेदारी निभाते हुए दुश्मन के एक बड़े हमले का माकूल जवाब देते हुए अपने साथियों को बचाने आखिरी दम तक लड़ते हुए शहीद हो गए. पिछले 23 सालों से दंडकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन में कॉमरेड् पवन का योगदान महत्वपूर्ण रहा. पश्चिम सब जोन के गढ़चिरोली आंदोलन के हर मोड के साथ उनका जीवन घुल मिल गया था. पहले दक्षिण गढ़चिरोली डिविजन सचिव की भी उन्होंने जिम्मेदारी निभायी. एक साधारण आदिवासी परिवार में पैदा हुए कॉमरेड् पवन 2015 में आयोजित दंडकारण्य स्पेशल जोन चौथे अधिवेशन के दूसरे प्लीनम में डीके एसजडसी के वैकल्पिक सदस्य के तौर पर चुने गए थे और 2017 में एसजडसी सदस्य बन गए.

पिछले साल भर में देश के विभिन्न स्पेशल जोनों/स्पेशल एरियाओं/राज्यों में ये नुकसान कई तरह से हुए हैं. इन शहादतों का विश्लेषण–संश्लेषण कर हमें आवश्यक सबक लेकर व उन पर सख्ती से अमल करते हुए अनावश्यक नुकसानों से बचना चाहिए. क्योंकि हम एक शक्तिशाली दुश्मन के साथ लड़ रहे हैं. इसलिए हमें हमारी शक्तियों जो वर्तमान में कमतर हैं, को यथासंभव बचाते

हुए, क्रमशः बढ़ाते हुए, दुश्मन की शक्तियों को टुकड़ों में सफाया करते हुए आगे बढ़ना होगा.

दुश्मन के प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान' हमलों का मुकाबला करने हमने हमारे रणनीतिक इलाकों में कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों व प्रतिरोध कार्यक्रमों को संचालित किया जिन्हें सफल बनाने के क्रम में कई कॉमरेडों ने शहादत को प्राप्त किया. इन कॉमरेडों ने साहसिक व वीरोचित ढंग से दुश्मन बलों के साथ लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर किए जोकि हमारे लिए अनुकरणीय है. इनके बलिदानों के बदौलत ही हमने जनयुद्ध में कई उल्लेखनीय जीतें हासिल की. दुश्मन के हमलों का बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए पिछले साल भर में हमारे कई कॉमरेडों ने अपने प्रोणों का बलिदान दिया. दंडकारण्य के जीरागुडा में 3 अप्रैल, 2021 को दुश्मन बलों जो समाधान–प्रहार हमलों के तहत 756 की संख्या में हमारे छापामार आधारों में घुसे थे, को एक बड़ा व जबर्दस्त धक्का देने में हमारी पीएलजीए के चार जांबाज योद्धाओं की शहादतें महत्वपूर्ण हैं. बिहार–झारखंड में भी दुश्मन के साथ मुठभेड़ों में हमें नुकसान झेलने पड़े. इस तरह के हमलों के दौरान हमारे बलों को कंबाट स्किल्स और तकनीक का कुशलतापूर्वक इस्तेमाल करते हुए नुकसानों को यथासंभव कम करना चाहिए.

दुश्मन के आधुनिक तकनीक व मुखबिरों की सूचनाओं पर आधारित हमलों के चलते भी हमने कुछेक महत्वपूर्ण कॉमरेडों को खोया है जिनमें उल्लेखनीय है, दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉमरेड् पवन की शहादत. नए मंगाए रेडियो में जीपीएस ट्रैकर लगाकर उसके जरिए हमारे कॉमरेडों के लोकेशन प्राप्त कर दुश्मन ने बड़े हमले को अंजाम दिया. दुश्मन अपने प्रतिक्रांतिकारी समाधान बहुआयामी हमलों के तहत कइयों धोखेबाजीपूर्ण तरीकें अपना रहा है. वह हमारी आपूर्ति व्यवस्था में घुसकर इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रिकल वस्तुओं जैसे कंप्यूटर्स, प्रिंटर्स, रेडियोज, पॉवर बैंक, सोलार प्लेट, वाकी टाकी आदि के भीतर जीपीएस ट्रैकर्स लगाकर भेज रहा है. इसके प्रति हमें जागरूक रहकर नुकसानों से बचना चाहिए.

जीरागुडा हमले के बाद डिजिटल सर्वेलेंस के तहत ड्रोनों की निगरानी के जरिए हमारा लोकेशन पाकर 19 अप्रैल को दुश्मन ने उस लोकेशन पर ड्रोनों के जरिए बमबारी की. हालांकि रात में ही डेरा खाली करने के कारण हमें कोई नुकसान नहीं हुआ. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में यह पहला हवाई हमला है. यह हवाई बमबारी एक शुरुआत है. आगे दुश्मन इसमें अवश्य तेजी लाएगा. इसलिए हवाई हमलों से बचने एवं उन हमलों को विफल करने

एअर डिफेंस–अफेंस दांव–पेंच के ड्रिल्स हमेशा प्रैक्टिस करना चाहिए एवं उनमें कुशलता हासिल करनी चाहिए.

दुश्मन विगत कुछ समय से हमारी आपूर्ति व्यवस्था में सेंध लगाते हुए विभिन्न खाद्य पदार्थों को विषाक्त बनाकर भेजने की पुरजोर कोशिश कर रहा है. ऐसे विषाक्त खाद्य पदार्थों के सेवन से तेलंगाना के कुछेक कॉमरेड् बीमार हो गए हालांकि पार्टी व पीएलजीए कतारों व डॉक्टरों की देखरेख में वे ठीक हो गए. एक कॉमरेड् विजेंदर शहीद हो गए. हमें हमारी सभी आवश्यकताओं के लिए जनता पर ही अधिकाधिक निर्भर होना चाहिए और हमें नुकसान पहुंचाने का कोई मौका दुश्मन को नहीं देना चाहिए. जनता से अलगांव पैदा करने लायक बाहरी खाद्य पदार्थों को नहीं मंगाना चाहिए. साथ ही हमारी आपूर्ति व्यवस्था में दुश्मन घुस न सके, एसा उसे मजबूत बनाना चाहिए.

दंडकारण्य के एक प्लाटून कमांडर कॉमरेड् गंगाल, डीवीसीएम कॉमरेड् शोभराय को गंभीर रूप से अस्वस्थ हालत में जब इलाज के लिए तेलंगाना के वारंगल शहर भेजा गया, उन्हें पकड़कर, उनके कोरोनाग्रस्त होने का झूठा प्रचार एवं अस्पताल में भर्ती करने की नौटंकी कर तेलंगाना पुलिस ने उनकी निर्मम हत्या की.

बूबीट्रापों, रिमोट, माइन हमलों को अंजाम देने के दौरान तकनीकी नियमों का सख्ती से, बिना लापरवाही के पालन करते हुए हमें दुर्घटनाओं में होने वाले नुकसानों से बचना चाहिए. पिछले साल के नुकसानों में हमने दंडकारण्य में एक कामरेड सोमजी (उत्तर बस्तर डीवीसीएम) को खोया.

कॉमरेडों!

आज हमारे देश में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने में एक ओर अंतर्राष्ट्रीय व देशीय परिस्थितियां काफी अनुकूल हैं तो दूसरी ओर शोषक–शासक वर्ग अपने निर्मम शोषण व शासन को बरकरार रखने के लिए भीषण दमन का प्रयोग कर रहे हैं.

साम्राज्यवादी आर्थिक व वित्तीय संकट के अभूतपूर्व ढंग से गहराते जाने के कारण दुनिया के प्रमुख अंतरविरोध दिन–ब–दिन तीखे होते जा रहे हैं. साम्राज्यवादियों के ही लाभलिप्सा के चलते पर्यावरण विध्वंस, खाद्य पदार्थों के असहज व विकृत उत्पादन के तरीकों से उत्पन्न व विकराल रूप धारण करती कोविड–19 कोरोना वैश्विक महामारी एवं उसकी रोकथाम के लिए दुनिया भर में अमल में लाए गए लॉकडाउन की वजह से आम आदमी का जीवन दूभर हो गया है. कोरोना तीव्रता तथा चिकित्सा विशेषज्ञों के सलाह, सुझावों के प्रति साम्राज्यवादियों एवं उनके दलाल शासकों की घोर लापरवाही के परिणामस्वरूप

दुनिया को भयभीत करने वाली कोविड के दूसरे चक्र के प्रकोप के चलते भारत सहित दुनिया भर में लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी. कोविड पर नियंत्रण पाने के लिए किए जा रहे वेक्सिनेशन और स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम को भी अत्यधिक मुनाफा कमाने के जरिए के तौर पर संचालित किया जा रहा है. संकट से उपजी परिस्थितियों से त्रस्त मजदूर, किसान एवं मध्य वर्ग के लोग पहले की तुलना में अधिकाधिक संख्या में सड़कों पर उतर रहे हैं और अपने संघर्षों को तेज कर रहे हैं. इस साल मई दिवस के मौके पर फ्रांस के कई शहरों में सामाजिक व आर्थिक न्याय की मांग को लेकर 300 से ज्यादा रैलियां हुईं. फासीवाद, नस्लवाद के अमानवीय तरीकों को अपनाकर साम्राज्यवादी इन संघर्षों को दबाने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं जिनके नतीजे स्वरूप जन आंदोलन और भी तेज व व्यापक होते जा रहे हैं. पिछले साल अमेरिका में हुए अध्यक्षीय चुनावों में अमेरिकी साम्राज्यवाद के फासीवादी–नस्लवादी चरित्र का प्रतीक बने डोनाल्ड ट्रंप की हार हुई. इसे अमेरिकी उत्पीड़ित जनता की नस्लवाद विरोधिता के रूप में भी देखा जा सकता है. तालिबान के साथ ट्रंप के समझौते पर अमल के तौर पर अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना को वापस बुलाने का बैडेन ने अधिकारिक ऐलान किया है.

हमारे देश में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी संघ परिवार की भाजपा जब से मोदी के नेतृत्व में केंद्र में सत्तारूढ़ हुई तब से वह एक ओर भारत को हिंदू राष्ट्र में तब्दील करने के एजेंडे पर कदम–दर–कदम आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है तो दूसरी ओर हमारे प्यारे भारत की प्राकृतिक संपदाओं, संसाधनों व सार्वजनिक संपत्ति को कौडियों के भाव बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा देश के दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों – अंबानी, अदानी आदि को सौंपने की भरसक कोशिश कर रही है. दूसरी बार सत्ता में आने के बाद तो उसकी आक्रामकता और बढ़ गयी. अपने एजेंडे के हिंदू राष्ट्र को मोदी ने 'नया भारत' का लोकलुभावन नाम दिया है. दरअसल मोदी का 'नया भारत' हिंदुत्व फासीवादी भारत के अलावा और कुछ नहीं है. इस परिकल्पना को वे आरएसएस की 100वीं स्थापना वर्षगांठ, 2025 तक पूरा करना चाहते हैं. भारत की उत्पीड़ित जनता मोदी के इस सपने को कभी साकार नहीं होने देगी.

पिछले साल भर में मोदी ने आत्मनिर्भर भारत का परदा डालकर ऐसे कई कदम उठाए जिनसे देश की नाममात्र की संप्रभुता भी पूरी तरह खत्म हो जाएगी.

कोविड के दूसरे चक्र के प्रकोप को भी भाजपा सरकार लॉकडाउन से रोकना चाह रही है. इससे करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए हैं. देश की जीडीपी में

नकारात्मक वृद्धि बेरोकटोक जारी है. छोटे दुकानदार, व्यापारी, पूंजीपति तबाह हो गए हैं. दरअसल वायरस के फैलाव की जिम्मेदारी स्वयं केंद्र सरकार की है जिसने महामारी के दौर में पांच राज्यों के चुनाव कराए और भारी रैलियां आयोजित की गयीं. साथ ही अंधविश्वासों के साथ कुंभ मेला का आयोजन किया गया जिसमें लाखों लोग इकट्ठे हो गए और यह महामारी के फैलाव का एक मुख्य कारण बन गया. आत्मनिर्भरता के नाम पर पिछले दिसंबर तक वैश्विक बाजार से वेक्सीन की खरीदी न करने व देश में तैयार वेक्सीन को विश्व गुरू के नाम पर विदेशों को उपलब्ध कराने की कूटनीति से कोविड रोकथाम के लिए जारी वेक्सिनेशन कार्यक्रम बूरी तरह प्रभावित हुआ. इस साम्राज्यवादसृजित आपदा को भी 'अवसर' में तब्दील करते हुए मोदी ने देशीय, विदेशी कॉरपोरेट घरानों को मालामाल करने 20 लाख करोड़ रुपए का पैकेज घोषित किया जिसका नाममात्र का अंश ही आम आदमी के लिए खर्च किया जा रहा है.

देश को खाद्यान्न के लिए भी पराधीन बनाते हुए, देश की खेती यानी उपजाऊ जमीन, उत्पादन व विपणन पर कॉरपोरेट घरानों का एकाधिकार कायम करने के लिए मोदी ने किसान विरोधी व देशद्रोही तीन कृषि कानूनों को अमल में लाया है. इनके खिलाफ व्यापक व जुझारू किसान आंदोलन पिछले 6 महीने से भी अधिक समय से जारी है. किसान दिल्ली को चौतरफा घेरकर बैठे हैं. उन्हें दिल्ली के भीतर घुसने से रोकने के लिए केंद्र सरकार ने अभूतपूर्व सुरक्षा घेरे का निर्माण किया है जिसे देश के सरहदों में भी देखा नहीं जा सकता है. इस आंदोलन के दौरान अब तक 300 से भी अधिक किसानों का देहांत हो गया है.

हिंदुत्व फासीवादी भारत के अपने सपने को साकार करने के अनुरूप भारत की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के ऊपरी ढांचे को प्रभावित करने के लिए निजीकरण–कॉरपोरेटीकरण, भगवाकरण व केंद्रीकरण के सम्मिश्रण के तौर पर मोदी सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को संसद में प्रस्तुत किए बगैर ही केबिनेट मंजूरी के जरिए आनन–फानन में अमल में लाया. इस शिक्षा नीति के अमल में आने से देश के गरीब आदिवासी, दलित, मुसलमान अल्पसंख्यक व पिछड़ा वर्ग के लोग शिक्षा खासकर उच्च शिक्षा से वंचित रह जाएंगे. हालांकि पहले से ही देश भर में लाखों प्राथमिक व माध्यमिक शालाओं को बंद कर उनकी जगह कुछेक हजार स्कूल कांप्लेक्स बनाए जा रहे हैं. दसियों हजार स्थायी शिक्षकों के पद हमेशा के लिए खत्म कर दिए जा रहे हैं. यह प्रक्रिया और तेज होनेवाली है.

केंद्र सरकार ने कॉरपोरेट हितों के अनुरूप, देश के मजदूरों के हितों को ताक पर रखकर मौजूदा 40 श्रम कानूनों को 4 कोड में तब्दील किया गया है. इससे लाखों की संख्या में मौजूद असंगठित मजदूरों जो ठेका श्रमिक, दैनिक

वेतनभोगी, दिहाड़ी मजदूर के तौर पर कार्य कर रहे हैं, को अनगिनत तकलीफों का सामना करना पड़ेगा.

देश में ऊर्जा के प्रमुख स्रोत कोयले का निजीकरण के तहत केंद्र सरकार ने कोल ब्लॉक आवंटन नीति अमल में लायी जिससे देशवासियों को बिजली के लिए कॉरपोरेट कंपनियों पर निर्भर रहना पड़ेगा.

भगवा ताकतों द्वारा अयोद्या में बाबरी मस्जिद को ध्वस्त करने के बाद उसकी जगह पर राम मंदिर का शिलान्यास भी हिंदुत्व एजेंडा का ही हिस्सा है. मोदी सरकार द्वारा बनाए गए नागरिकता संशोधन कानून–सीएए, प्रस्तावित एनआरसी व एनपीआर के विरुद्ध देश भर में जबर्दस्त संघर्ष हुए. मुसलमान महिलाओं के शानदार शाहीनबाग आंदोलन पर पुलिस संरक्षण व समर्थन में अंजाम दिए गए भगवा गुंडों के हमले जिसमें 53 आंदोलनकारियों की जघन्य हत्या की गयी, के बाद मुसलमान जनता में देश भर में आक्रोश व्याप्त है.

इसी साल हुए पांच राज्यों के चुनावों में से बंगाल और केरल में मोदी को मुंह की खानी पड़ी. हालांकि सभी संसदीय पार्टियां कॉरपोरेट हित साधने वाले ही हैं लेकिन विपक्ष रहित भारत के मोदी के मंसुबों पर पानी फेरने में ये चुनाव कामयाब हुए. भगवा ताकत को और मजबूती व विस्तार देने के मोदी मार्ग में जनता द्वारा पैदा की गयी अड़चन स्वरूप इन चुनावों को देखा जा सकता है.

ऊंची कहलाने वाली जातियों के प्रभुत्व को कायम रखने के तहत गोरक्षा सहित कई बहाने देश के अत्यधिक राज्यों में भगवा गुंडों द्वारा या भगवा ताकतों के संरक्षण में दलितों पर अमानवीय अत्याचार जारी हैं. दलित चेतना का प्रतीक बने बीमा–कोरेगांव के अस्तित्व को मिटाने के लिए फर्जी मामला बनाकर देश के प्रमुख प्रगतिशील–जनवादी बुद्धिजीवियों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, अधिवक्ताओं, लेखकों, कलाकारों पर हमलें व उनकी गिरफ्तारियां पिछले तीन सालों से लगातार बढ़ रही हैं. हाल ही में तेलंगाना की जन विरोधी टीआरएस सरकार ने अलोकतांत्रिक कदम उठाते हुए 16 जनसंगठनों पर पाबंदी लगायी. इससे दलितों व देशभक्त ताकतों, जनवादियों सहित उत्पीड़ित जनता के बीच में रोष व्याप्त है.

राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को खत्म करने के तहत कश्मीर की जनता की आजादी की आकांक्षाओं पर कुठाराघात करते हुए संविधान की धारा–370 व 35–ए को समाप्त किया गया जिससे कश्मिरी जनता का भारत सरकार के प्रति घृणा और बढ़ गया है. साम, दान, दंड, भेद के तरीकों द्वारा पूर्वोत्तर की राष्ट्रीयताओं के मुक्ति आंदोलनों को दबाने की मोदी सरकार की कोशिशें जारी हैं.

शोषक वर्गों की सत्ता व लूट को कायम रखने के तहत मोदी सरकार ने इस देश में नव जनवादी क्रांति को सफल बनाकर नव जनवादी भारत के निर्माण के लिए वर्ग संघर्ष व जनयुद्ध को संचालित करने वाली हमारी पार्टी, पीएलजीए, जन राज्यसत्ता के संगठनों कुल मिलाकर कहा जाए तो भारत के क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करने के मकसद से मई, 2017 से प्रतिक्रांतिकारी रणनीतिक दमन योजना 'समाधान' पर अमल कर रही है. इसके तहत संघर्ष इलाकों में पुलिस, अर्ध–सैनिक बलों, कमांडो बलों व सैन्य बलों के नए–नए कैंप बैठाते हुए कॉरपेट सेक्युरिटी व्यवस्था को मजबूत कर रही है और उसे फैला रही है. इनके जरिए लगातार हमलें कर रही है. जनवरी 2020 से प्रहार के नाम पर हमलों को तेज किया गया है. दंडकारण्य में नवंबर, 2020 से दस दांव–पेंचों के साथ समाधान–प्रहार के निर्णायक हमलें किए जा रहे हैं. ये समाधान–प्रहार हमलें देश के सभी वर्ग संघर्ष व जनयुद्ध के इलाकों में जारी हैं. हालांकि हमारे आंदोलन के अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग तरीकों में ये हमलें किए जा रहे हैं. लेकिन पार्टी, पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए एवं जन निर्माण तथा क्रांतिकारी जनता इन समाधान हमलों का बहादुरी के साथ सामना कर रही हैं. हालांकि इस मुकाबले में हमने अब तक बहुत खून बहाया है. दुश्मन ने समाधान के जरिए देश के क्रांतिकारी आंदोलन को खत्म करने का लक्ष्य मई 2022 रखा है जोकि असंभव है. भारत की जनता की मुक्ति के लिए ये खूनी बलिदान आवश्यक तो हैं. लेकिन कम से कम नुकसानों के साथ हमें हमारा लक्ष्य हासिल करना है. असमान बहादुरी, अटल विश्वास, लक्ष्य के प्रति दृढ संकल्प, पहलकदमी के साथ हमें आगे बढ़ना है. हमें उपलब्ध तमाम मौकों का सही इस्तेमाल करते हुए अलग–अलग संघर्ष इलाकों की ठोस स्थिति के मुताबिक छोटी, मध्यम व बेहद् अनुकूल स्थिति में बड़ी छापामार कार्रवाइयों के जरिए जनयुद्ध/छापामार युद्ध को तेज व व्यापक बनाना चाहिए. कॉरपेट सेक्युरिटी व्यवस्था के बीच ही मजबूत गुप्त पार्टी का निर्माण करते हुए वर्ग संघर्ष को तेज व व्यापक बनाना चाहिए. इस तरह हमें दुश्मन के 'समाधान' का माकूल जवाब देते हुए उसे हराने की दिशा में आगे बढ़ना है. 'समाधान' हमलों का मुकाबला करने का हमें पिछले चार सालों का अनुभव प्राप्त है. दंडकारण्य, झारखंड, आंध्रप्रदेश–ओडिशा के सरहदी क्षेत्र की जनता पुलिस कैंपों तद्वारा होने वाले अपने विस्थापन के खिलाफ जी जान से लड़ रही है. केंद्र एवं राज्य सरकारों की जन विरोधी आर्थिक, औद्योगिक, खनन, श्रम, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ व दलित–आदिवासी–मुस्लिम विरोधी नीतियों के कारण देश के तमाम उत्पीड़ित वर्गों व विशेष सामाजिक तबकों की जनता इन सरकारों के प्रति आक्रोशित है, आंदोलनरत है. इस बुनियाद पर जन

आंदोलनों, जन प्रतिरोध व जनयुद्ध को समन्वित ढंग से संचालित करने के जरिए हम हमारे लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं.

कॉमरेडों,

उपरोक्त अनुकूल अंतर्राष्ट्रीय व देशीय परिस्थितियों का सही इस्तेमाल करने लायक पार्टी, सेना, संयुक्त मोर्चा क्षेत्रों के सभी कतारों के राजनीतिक, वैचारिक, सांगठनिक, सैनिक व सांस्कृतिक स्तर को विकसित करते हुए तमाम उत्पीड़ित वर्गों व विशेष सामाजिक तबकों की जनता को वर्ग संघर्ष–जनयुद्ध में गोलबंद करेंगे. साम्राज्यवादविरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद विरोधी, सामांतवाद विरोधी वर्ग संघर्ष को तेज करेंगे, विस्तार करेंगे. वर्तमान में शोषक–शासक वर्गों का विश्वसनीय पिट्ठू बनकर उनकी सेवा व गुलामी करने वाले ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी ताकतों के खिलाफ व्यापक, जुझारू, संगठित जनांदोलन का निर्माण करेंगे. मोदी के हिंदुत्व फासीवादी भारत की परिकल्पना को विफल बनाएंगे और नव जनवादी भारत का निर्माण करने की दिशा में कदम बढ़ाएंगे. यही हमारे प्यारे शहीदों का आशय है. शहीदों के आशयों की पूर्ति के लिए आखिरी दम तक अथक मेहनत करने का संकल्प लेंगे. यही शहीदों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी.

प्यारे कॉमरेडो, लोगों!

शहीद स्मृति सप्ताह के कार्यक्रमः

1. शहीद स्मृति सप्ताह के मौके पर गांव–गलियों, कस्बों व शहरों में वहां की ठोस परिस्थितियों के अनुसार खुला, गुप्त तरीकों में शहीदों की छोटी, बड़ी यादगार सभाओं का आयोजन कर सीसी संदेश को जन–जन तक पहुंचाना चाहिए. शहीदों के परिजनों को इन सभाओं में आमंत्रित करना चाहिए एवं उन्हें मंच पर बैठाकर सभाजनों से उनका परिचय कराना चाहिए तथा यथासंभव वक्तव्य दिलवाना चाहिए.
2. शहीदों के परिवारजनों को सांत्वना संदेश, शहीदों की जीवनियां, तस्वीरें व उनके स्मृति चिन्ह पहुंचाना चाहिए. उनके सुख, दुख में शामिल होते हुए उन्हें विभिन्न रूपों में आवश्यक मदद पहुंचानी चाहिए. शहीदों की स्फूर्ति से लैसकर उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन के पक्ष में मजबूती से डटे रहने की शिक्षा देनी चाहिए.
3. स्पेशल जोन/राज्य/स्पेशल एरियावार, डिविजन/जिला/जोनवार और इलाकावार भी शहीदों की जीवनियां प्रकाशित करनी चाहिए. शहीदों के बलिदानों, आदर्शों, उनकी अच्छी आदतों को ऊंचा उठाते हुए पर्चा, पोस्टर,

ब्राउचर, बैनर, कविताएं, कहानियां, नाटक आदि बनाकर/छापकर व्यापक प्रचार करना चाहिए. इस हेतु प्रिंट, इलेक्ट्रानिक व सोशल मीडिया का आवश्यक सावधानियों के साथ उपयोग करना चाहिए. जगह–जगह स्मारकों का निर्माण कर अनावरण करना चाहिए.

4. क्रांतिकारी सांस्कृतिक संगठनों के जरिए शहीदों की जीवनियों, उनके बलिदानों पर विभिन्न कला रूपों – गीत, समूह गान, समूह नृत्य, नाटक आदि को तैयार कर प्रत्यक्ष तौर पर प्रदर्शन देने के अलावा डिजिटल माध्यमों का उपयोग करना चाहिए.

इलाका विशेष को ध्यान में रखकर उपरोक्त कार्यक्रम को अमल में लाना चाहिए. हमारे प्यारे शहीदों के सर्वोच्च बलिदानों की स्फूर्ति से लैस करते हुए, दुश्मन के समाधान–प्रहार हमलों को हराने के लिए जनता को राजनीतिक रूप से तैयार करने के अभियान के तौर पर शहीद स्मृति सप्ताह का आयोजन करना चाहिए.

नारेः

★ हमारी पार्टी के संस्थापक नेता और शिक्षक कॉमरेड् चारु मजुमदार और कॉमरेड् कन्हाई चटर्जी को लाल सलाम्.

★ तमाम शहीद योद्धाओं को लाल सलाम्.

★ शहीदों के आशयों को पूरा करेंगे.

★ शहीदों के बलिदानों को ऊंचा उठाएंगे.

★ प्रतिक्रांतिकारी रणनीतिक दमन योजना 'समाधान' को हराएंगे. समाधान–प्रहार हमलों को हराएंगे.

★ दंडेकारण्य में ड्रोन हमलों का विरोध करेंगे.

★ दंडकारण्य की धरती पर भारतीय सेना को उतारने का विरोध करो.

★ छापामार युद्ध नियमों का सख्ती से पालन करेंगे.

★ अनावश्यक नुकसानों को कम करेंगे.

★ दंडकारण्य, बिहार–झारखंड, पूर्वी बिहार–पूर्वोत्तर झारखंड को आधार इलाका बनाने के लक्ष्य के साथ काम करेंगे.

★ साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद विरोधी, सामंतवाद विरोधी वर्ग संघर्ष को तेज करेंगे.

★ साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद विरोधी, सामंतवाद विरोधी वर्ग संघर्ष का विस्तार करेंगे.

★ छापामार युद्ध/जनयुद्ध को तेज करेंगे.

★ छापामार युद्ध/जनयुद्ध का विस्तार करेंगे.

★ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद को हराएंगे.

★ भारत की नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद.

★ विश्व समाजवादी क्रांति जिंदाबाद.

★ साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद और सामंतवाद मुर्दाबाद.

★ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद.

★ मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद जिंदाबाद.

22 जून, 2021

केंद्रीय कमेटी,

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)